SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-3 July - September 2026 E-ISSN: 2584-2900

महाकवि कालिदास के रघुवंशम में काव्य शास्त्रीय वैशिष्ट्य और जीवन मूल्य

सत्यवती चौरसिया

सहायक प्राध्यापक, (संस्कृत)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास का स्थान सर्वोच्च माना गया है। महाकवि कालिदास रचित रघुवंशम में काव्यशास्त्र (जैसे -उपमा,रस और ध्वनि) और जीवन मूल्यों (त्याग, पुरुषार्थ, धर्म) का अद्भुत समन्वय है। रघुवंशम् एक उत्कृष्ट महाकाव्य माना जाता है। जिसमें रघुकुल के रघुवंशी राजाओं के आदर्श, न्यायप्रिय शासन, नैतिकता, धर्म, त्याग, नारी सम्मान, गुरु -भक्ति, प्रेम, वीरता, परोपकार तथा लोक कल्याण की भावना का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण चित्रित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में रघुवंशम् के काव्य शास्त्रीय वैशिष्ट्य तथा उसमें निहित मानवीय जीवन- मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। काव्य शास्त्रीय रूप जैसे -अलंकार, रस, रीति, गुण, ध्वनि तथा प्रकृति चित्रण के माध्यम से महाकाव्य को अद्वितीय कलात्मक प्रदान की है। साथ ही इस महाकाव्य में सत्य, धर्म, त्याग, कर्तव्य, पारिवारिक मर्यादा आदर्श, नेतृत्व एवं लोकहित जैसे - मानवीय मूल्यों को भी प्रतिष्ठित किया गया है। कालिदास ने अपने पात्रों के माध्यम से आदर्श जीवन दृष्टि का प्रतिपादन किया है, जो आज भी सामाजिक सांस्कृतिक तथा नैतिक दृष्टि से समान रूप से प्रासंगिक है।

बीज-शब्द

कालिदास, रघुवंशम, महाकाव्य, काव्यशास्त्र, रस, अलंकार, जीवन- मूल्य, आदर्श, संस्कृत साहित्य।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध साहित्यिक परंपराओं में से एक है, इसमें महाकवि कालिदास को संस्कृत सम्राट कहा जाता है, एवं उन्हें" कवि कुलगुरू" के नाम से भी

प्रसिद्धि मिली है। उनकी प्रमुख रचनाओं में रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्, ऋतु संहारम् तथा अभिज्ञान शाकुंतलम् विश्व प्रसिद्ध मानी जाती है। रघुवंशम 19 सर्ग का महाकाव्य माना जाता है, जिसमें रघुकुल सूर्यवंशीय राजाओं का अद्भुत वर्णन मिलता है। इस महाकाव्य में सर्वप्रथम राजा दिलीप से लेकर अंतिम राजा अग्नि वर्ण तक के राजाओं का इतिहास एवं आदर्श चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया गया है। महाकवि कालिदास ने न केवल ऐतिहासिक आख्यान प्रस्तुत किया बल्कि आदर्श शासन, नीति, धर्म, संस्कृति और जीवन दर्शन को भी अत्यंत रोचक एवं कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है। इस महाकाव्य में भगवान श्री राम का चरित्र, मर्यादा, सत्य, त्याग और आदर्श नेतृत्व का सर्वोच्च प्रतिमान प्रस्तुत किया गया है।

काव्य शास्त्रीय दृष्टि से रघुवंशम् अत्यंत समृद्ध महाकाव्य माना जाता है। इसमें रस, अलंकार, रीति -गुण, ध्वनि तथा प्रकृति चित्रण का उत्कृष्ट समन्वय प्राप्त होता है। महाकवि ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का अत्यंत स्वाभाविक एवं कलात्मक प्रयोग करते हुए काव्य का सौंदर्य, माधुर्य एवं प्रभावशीलता प्रदान की है।

उनकी भाषा प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों से युक्त है, जो पाठकों के हृदय पर स्थाई प्रभाव उत्पन्न करती है। वर्तमान समय में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के चरण की स्थिति में रघुवंशम् जैसे महाकाव्य का अध्ययन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। इस महाकाव्य में निहित सेवा धर्म, त्याग, परोपकार, गुरु -भक्ति, नारी सम्मान, पारिवारिक मर्यादा तथा लोक कल्याण जैसे -जीवन मूल्य आधुनिक समय के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं। इस दृष्टि से रघुवंशम केवल साहित्यिक सौंदर्य का ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति एवं जीवन- दर्शन का जीवंत दस्तावेज है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध पत्र में रघुवंशम के काव्य शास्त्रीय वैशिष्ट्य तथा उसमें प्रतिपादित जीवन मूल्यों का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिसमें महाकवि की साहित्यिक प्रतिभा तथा उनके जीवन दर्शन की व्यापकता का सम्यक मूल्यांकन किया जा सके। दूसरा उद्देश्य रघुवंशम में वर्णित नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पारिवारिक तथा मानवीय जीवन मूल्यों का विश्लेषण

करना है। सत्य, धर्म, न्याय, कर्तव्य परायणता, लोक कल्याण, आदर्श नेतृत्व, न्याय प्रियता, करुणा तथा मानवीय संवेदनाओं जैसे मूल्यों की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता को स्पष्ट करना इस अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य होगा। रघुवंशम की राजाओं का चरित्र भारतीय आदर्श शासन व्यवस्था का प्रतीक है इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह भी होगा कि हम आज की भारतीय शासन व्यवस्था को इस महाकाव्य से जोड़कर वर्तमान समय में इसका लाभ प्राप्त करें।

महाकवि कालिदास ने इस महाकाव्य में आदर्श राजा, सुशासन, उत्तरदायित्व, जनकल्याण तथा नैतिक नेतृत्व के जिन सिद्धांतों का चित्रण किया है, यह तत्व ही वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था और प्रशासनिक मूल्य के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हो सकते हैं। वर्तमान समय में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। इस शोध का उद्देश्य यह भी स्पष्ट करता है कि रघुवंश में वर्णित जीवन -मूल्य विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा समाज के लिए चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में सहायक सिद्ध हो सकेंगे।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना भी है कि रघुवंशम केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि समाज का दर्पण भी है। इसमें वर्णित पारिवारिक संबंध, स्त्री- पुरुष की भूमिका, धर्म और कर्तव्य की अवधारणाएं आधुनिक समाज के लिए किस प्रकार मार्गदर्शन सिद्ध होगी यह विश्लेषण इस शोध में किया जाएगा।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की मूल परिकल्पना यह है कि रघुवंशम् महाकाव्य में काव्य शास्त्रीय वैशिष्ट्य केवल कलात्मक संरचना के उपकरण नहीं है, बल्कि वे जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति के सक्रिय माध्यम हैं। इस महाकाव्य में प्रतिपादित धर्म, सत्य, कर्तव्य, आदर्श नेतृत्व, लोकमंगल एवं मानवीय संवेदनाएं वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में भी सार्थक और अनुप्रयोग शील हैं।

साहित्य समीक्षा

(1) संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास का स्थान सर्वोच्च माना गया है। उनकी काव्य पर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक अनेक विद्वानों ने शोध एवं आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किए हैं।

२) मल्लिनाथ की टीका संजीवनी रघुवंशम् की सर्वाधिक प्रमाणिक व्याख्या मानी जाती है। मल्लिनाथ प्रत्येक श्लोक का भाषिक, व्याकरणिक तथा काव्यशास्त्रीय विवेचन करते हुए अलंकार, रस, छंद और अर्थ -गौरव की विषद व्याख्या की है। आधुनिक शोधों में भी इस टीका को मूल आधार माना गया है।

३) आचार्य मम्मट, विश्वनाथ, भामह, दांडी तथा आनंदवर्धन जैसे काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य के स्वरूप, गुण, रस, रीति तथा ध्वनि के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है।

४) इस प्रकार साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि रघुवंशम् पर पर्याप्त शुद्ध कर उपलब्ध हैं। तथापि काव्य शास्त्रीय विशिष्ठताओं और जीवन मूल्यों के समन्वित अध्ययन की अभी भी पर्याप्त आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध इस पूर्ति का प्रयास करेगा तथा कालिदास के साहित्य की बहुआयामी स्वरूप को नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत करेगा।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का स्वरूप मुख्यतः साहित्य आधारित (पुस्तकालय आधारित) है। जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में रघुवंशम् महाकाव्य का मूल संस्कृत पाठ तथा उसके प्रमाणिक संस्करणों का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में कालिदास पर लिखित आलोचनात्मक ग्रंथ, संस्कृत काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ, भारतीय दर्शन, जीवन -मूल्य, सांस्कृतिक अध्ययन, शोध-प्रबंध, शोध -पत्र, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाएं तथा अन्य संदर्भ ग्रंथ सम्मिलित किए गए हैं। रघुवंशम महाकाव्य में काव्य शास्त्रीय दृष्टि सेसभी लक्षण विद्वान हैं। इनकी भाषा शैली का उत्कृष्ट समन्वय इस महाकाव्य में दिखाई

देता है। यही कारण है कि महाकाव्य संस्कृत काव्य परंपरा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है। शोध हेतु काव्य शास्त्रीय वैशिष्ट्य के अंतर्गत हम निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डालेंगे–

१) महाकाव्य की लक्षणों की पूर्णता

२) रस- वैशिष्ट्य

३) अलंकार वैशिष्ट्य

४) प्रकृति- चित्रण

५) छंद - योजना

६) भाषा शैली

१) महाकाव्य के लक्षणों की पूर्णता- संस्कृत महाकाव्य की परंपरा के अनुसार काव्य का आरंभ मंगलाचरण से होता है

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥ १॥१.

अर्थात् इसमें शिव और पार्वती की वंदना की गई है। यह केवल धार्मिक श्रद्धा का परिचायक ही नहीं, बल्कि काव्य की मंगल कामना और आध्यात्मिक आधार का भी संकेत है। काव्य शास्त्र के अनुसार महाकाव्य में उदात्तनायक, ऐतिहासिक अथवा पौराणिक कथानक, सर्ग बद्ध रचना, प्रकृति वर्णन, नगर वर्णन, ऋतु वर्णन, युद्ध, विवाह, यज्ञ तथा लोकहित कार्य उद्देश्य का समावेश होना आवश्यक है। रघुवंशम् इन सभी विशेषताओं को पूर्ण रूप से धारण करता है। रघुवंशम् के राजा आदर्श नायक हैं और संपूर्ण कथा धर्म तथा लोकमंगल की भावना से प्रेरित है।

२) रस-वैशिष्ट्य- महाकाव्य में वीर रस प्रधान है। (रघु का दिग्विजय, राम का पराक्रम) इसके साथ ही अज-विलाप में करुण रस और राजा दिलीप व श्री राम के प्रसंगों में शांत और श्रृंगार रस का अत्यंत हृदयग्रही प्रयोग हुआ है। अर्थात् इसमें वीर रस को प्रधान (अंगी रस) माना है।

जिसे महाकवि कालिदास ने श्रृंगार, करूण और शांत रसों की अद्भुत सामंजस्य के साथ पिरोया है, जो काव्यात्मक उत्कृष्टता और जीवन की विविध पक्षों को निरूपित करता है। रघुवंशम् के राजा पराक्रमी, दिग्विजय और धर्म योद्धा हैं। उदाहरण तौर पर रघु की दिग्विजय यात्रा और महाराज दशरथ व राम के युद्ध प्रसंगों में वीर रस का ओजपूर्ण चित्रण चित्रित है। महाकवि कालिदास ने युद्ध के भीषण दृश्य के माध्यम से क्षत्रिय धर्म के शौर्य को साकार किया है। वीर रस, उपमा और श्रृंगार रस का अत्यंत सरस और मर्यादित चित्रण हुआ है।

महाकवि कालिदास परिस्थितियों के समक्ष चरित्र और संवादों के माध्यम से रस की निष्पत्ति करते हैं। जैसे कि वीर रस के लिए श्री राम की शौर्य, विश्वामित्र के साथ प्रस्थान राक्षस वध, तथा धर्म रक्षा के प्रसंग में उत्साह स्थाई भाव के रूप में प्रकट मान है। श्री राम का पराक्रम केवल युद्ध कौशल तक सीमित नहीं है, बल्कि धर्म और मर्यादा की रक्षा के लिए समर्पित आदर्श वीरत्व का प्रतीक है। इस प्रकार महाकवि कालिदास वीर रस को नैतिक मूल्यों व आदर्शों के साथ जोड़ते हैं। दशरथ का पुत्र वियोग, श्रवण कुमार प्रसंग से उत्पन्न मानसिक पीड़ा तथा राम के वन गमन की परिस्थितियां करुण रस की सशक्त अभिव्यक्ति करती है। कालिदास ने करुणा का चित्रण अत्यंत मार्मिक व संयमित रूम से किया है। महाकवि कालिदास की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि रस की अभिव्यक्ति के लिए कृत्रिम उपाय का सहारा नहीं लेते। प्रकृति वर्णन, उपमा, रूपक, चरित्र -चित्रण संवाद और प्रसंग विन्यास के माध्यम से रस स्वत: विकसित होता है। प्रत्येक प्रसंग में रसों की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। जिसे पाठक पूर्ण अनुभूति के साथ अपने हृदय को भाव विभोर करता है।

३) अलंकार वैशिष्ट्य- कालिदास अपनी स्वाभाविक और सहज अलंकार योजना के लिए प्रसिद्ध है उन्होंने अपने काव्य को सौंदर्य बनाने एवं भावों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए अलंकारों का अद्भुत प्रयोग किया है उनके उपाय अत्यधिक सटीक प्राकृतिक और हृदय स्पर्शी होती हैं ।उपमा अलंकार उनका प्रधान अलंकार माना जाता है जिसके लिए उन्हें "उपमा कालिदाससय " कहा जाता है। रघुवंशम महाकाव्य में उन्होंने गंगा -जमुना के संगम और नदी सागर की संबंध हो को दर्शाने के लिए अद्भुत उपमा का प्रयोग किया है। महाकवि कालिदास ने अलंकारों का प्रदर्शन मात्र

नहीं किया, बल्कि वे कथानक और रस के साथ स्वयं ही घुल मिल जाते हैं। उनकी उपमाओं में सजीवता दृष्टिगत होती है जो अन्य कवियों से दुर्लभ मानी जाती है। उपमा अलंकार के प्रसिद्ध श्लोक से महाकवि को "दीपशिखा कालिदास" की उपाधि मिली।

महाकवि ने इंदुमती की तुलना एक जलती हुई दीपशिखा से की है। महाकवि ने इंदुमती को रात्रि में चलते दीपक की लौ की भांति और राजाओं को उसके आगे बढ़ने पर अंधेरे में डूबते हुए बताया है।

४) प्रकृति-चित्रण- रघुवंशम् महाकाव्य में महाकवि ने प्रकृति का सजीव चित्रण किया है, उनके अनुसार प्रकृति मानव जीवन की सहचरी है। पर्वत, वन, नदी, वर्षा ऋतुएँ और पुष्प पात्रों की भावनाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। प्रकृति का यह मानवीकरण उनकी विशिष्ट काव्य दृष्टि का परिचायक है।

५) छंद-योजना- महाकाव्य के छंदों में वीरता, प्रकृति और राजवैभव का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। छंदों की यह विविधता महाकाव्य को संगीतात्मक, लयात्मकता और सौंदर्य प्रदान करती है।

६) भाषा शैली- महाकवि कालिदास की भाषा शैली सरल,सहज एवं ओज पूर्ण है। इसमें सरलता, माधुर्य, प्रसाद, ओज तथा सौंदर्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। रघुवंशम की भाषा शैली वेदरभी रीति का उत्कृष्ट उदाहरण है। महाकवि की रचनाओं में प्रयुक्त भाषा न तो अत्यधिक क्लिषट है और न ही अत्यधिक सरल, बल्कि विद्वानों और सामान्य पाठकों दोनों के लिए समान रूप से आकर्षक है। महाकवि ने अपने भावों को अत्यंत स्वाभाविक, प्रभावशाली और कलात्मक भाषा के रूप में व्यक्त किया है।

इंदुमती स्वयंवर- मे

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ

यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।(५/६७) रघुवंशम्

इस उपमा से भाषा की मधुरता और वेदरभी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है। निम्नलिखित श्लोक में भाषा सरल, कोमल, मधुर और सहज बोधगम्य है। इसमें कृत्रिमता नहीं है। महाकवि कालिदास की भाषा में अर्थ की स्पष्टता और सहजता निहित है। उनके श्लोक बिना किसी विशेष कठिनाई के समझ में आ जाते हैं।

उदाहरण - त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम् ।

यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥

(रघुवंशम् 1.7)

अर्थात् रघुवंशी राजाओं ने धन का संग्रह दान के लिए, वाणी का प्रयोग सत्य के लिए, विजय का प्रयत्न यश के लिए और गृहस्थ जीवन का प्रजा की उन्नति के लिए किया है। यह श्लोक भाषा की सरलता और जीवन- मूल्यों की स्पष्ट अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। माधुर्य गुण श्रृंगार एवं कोमल भावों के वर्णन में भाषा अत्यंत मधुर और ललित हो जाती है। रघुवंश के दिग्विजय प्रसंग में रघु की वीरता का वर्णन ओजस्वी भाषा में किया गया है, जहां प्रत्येक पद वीर भाव को प्रबल बनाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में रघुवंशम महाकाव्य में निहित काव्य शास्त्रीय वैशिष्ट्य को केवल कलात्मक संरचना के आधार पर नहीं बल्कि जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति के सक्रिय माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया है। इस महाकाव्य में प्रतिपादित धर्म, सत्य, कर्तव्य, लोकमंगल, आदर्श नेतृत्व एवं मानवीय संवेदनाएं वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के रूप में सार्थक और अनुप्रयोगशील हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रघुवंशम् केवल सहित्यिक सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण नहीं बल्कि भारतीय जीवन दर्शन और मानवीय मूल्यों का कालजयी ग्रंथ भी है। शोध में पारंपरिक भारतीय साहित्यिक दृष्टि के साथ-साथ आधुनिक मूल्य परक एवं सांस्कृतिक आलोचना की अवधारणाओं को भी आधार बनाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है

कि रघुवंशम में प्रतिपादित जीवन मूल्य आज की वैश्वीकरण नैतिक संकट सामाजिक परिवर्तन तथा मानवीय संबंधों की चुनौतियों के बीच भी समान रूप से प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी हैं। शोध का मुख्य उद्देश्य रघुवंशम् के काव्य शास्त्रीय सौंदर्य और जीवन दर्शन का समन्वित अध्ययन प्रस्तुत करना है, जिससे संस्कृत साहित्य के शोधार्थियों को एक नवीन आलोचनात्मक दृष्टि प्राप्त हो तथा यह अध्ययन भविष्य के अनुसंधानों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चतुर्वेदी, सीताराम. (2020). रघुवंशम्. चौखंबा विद्या भवन। (पृ. 12-18)
2. कालिदास. (n.d.). राजकमल प्रकाशन। (पृ. 85-130)
3. उपाध्याय, बलदेव. (2019). संस्कृत साहित्य का इतिहास. शारदा निकेतन। (पृ. 186-198)
4. कालिदास का काव्य-कौशल. (n.d.). विश्वविद्यालय प्रकाशन। (पृ. 45-90)
5. चतुर्वेदी, सीताराम. (n.d.). कालिदास रघुवंशम्।
6. चतुर्वेदी, सीताराम (सम्पा.). (2019). कालिदास ग्रंथावली (तृतीय संस्करण): रघुवंशम्. भारत प्रकाशन मंदिर।